पाठ-1

# णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं।।

अर्थ - लोक के सब अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो। आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो। और सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र में पाँच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है इसलिए इस मंत्र को णमोकार मंत्र या नमस्कार मंत्र भी कहते हैं।

## परमेष्ठी का लक्षण

जो आत्मा के पदों और गुणों में सबसे बड़े होते हैं तथा राजा, महाराजा व इन्द्र भी जिनको सिर झुकाते हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं। परमेष्ठी पाँच होते हैं।

## परमेष्ठी के नाम

1. अरिहंत 2. सिद्ध 3. आचार्य 4. उपाध्याय 5. साधु । ये पाँच परमेष्ठी हैं।

## णमोकार मंत्र का महत्त्व

ऐसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।

शब्दार्थ - ऐसो = यह, पंच = पाँच, णमोयारो = नमस्कार, सव्व पावप्पणासणो = सभी पापों का नाश करने वाला है, मंगलाणं = मंगलों में, च = और, सव्वेसिं = सब, पढमं = पहला, होई = है।



अर्थ सौजन्य : श्रीमती पुष्पाबेन गुलाबचन्द शाह, मुम्बई

# प्रार्थना

जीवन हम आदर्श बनायें, अनुशासन के नयम निभायें।
वीतराग जिनदेव भजेंगे, जिनवाणी अनुशरण करेंगे।
परम दिगम्बर मुनि पूजेंगे, उन पर श्रद्धा भक्ति बढ़ायें ॥1॥
सदा बड़ों की विनय करेंगे, छोटों के प्रति प्रेम रखेंगे।
सबसे मिलकर नेक बनेंगे, शक्ति एकता की दिखलायें ॥2॥
गुरु उपकार नहीं भूलेंगे, गुरु संकेत से शिक्षा लेंगे।
विनय नम्रता नहीं भूलेंगे, धीरज समता को अपनायें ॥3॥
रात्रि भोजन नहीं करेंगे, छान के पानी सदा पीयेंगे।
प्रभु के दर्शन नित्य करेंगे, इनके ही गुणगान को गायें ॥4॥
कभी किसी से नहीं लड़ेंगे, प्रेमभाव हम सदा रखेंगे।
दुखियों पर हम दया करेंगे, उनकी सेवा कर सुख पायें ॥5॥
चुगली भी हम नहीं करेंगे, बिना दिये कुछ चीज न लेंगे।
खोटी संगत सदा तजेंगे, सप्त व्यसन को दूर भगायें ॥6॥

# जिनवाणी स्तुति

हे भारती माँ, हे भारती माँ, अज्ञानता से हमें तार देना।
मुनियों ने समझी गुणियों ने जानी, शास्त्रों की भाषा आगम की वाणी।
हम भी जो जानें, हम भी तो समझें, विद्या का फल तो हमे मातु देना ॥1॥

तू ज्ञानदायी हमें ज्ञान दे दे, रत्नत्रयों का हमें दान दे दे।
मन से हमारे मिटा दे अंधेरे, हमको उजालों का शिव द्वार देना ॥2॥

तू मोक्षदायी है संगीत तुझमें, हर शब्द तेरा है हर भाव तुझमें।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे, तेरी शरण माँ, हमें तार देना ॥3॥

## पाठ-1

# णमोकार महामंत्र

**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं।।**

अर्थ - लोक के सब अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो। आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो। और सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र में पाँच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है इसलिए इस मंत्र को णमोकार मंत्र या नमस्कार मंत्र भी कहते हैं।

## परमेष्ठी का लक्षण

जो आत्मा के पदों और गुणों में सबसे बड़े होते हैं तथा राजा, महाराजा व इन्द्र भी जिनको सिर झुकाते हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं। परमेष्ठी पाँच होते हैं।

## परमेष्ठी के नाम

1. अरिहंत 2. सिद्ध 3. आचार्य 4. उपाध्याय 5. साधु । ये पाँच परमेष्ठी हैं।

## णमोकार मंत्र का महत्त्व

**ऐसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।**
**मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।**

शब्दार्थ - ऐसो = यह, पंच = पाँच, णमोयारो = नमस्कार, सव्व पावप्पणासणो = सभी पापों का नाश करने वाला है, मंगलाणं =मंगलों में, च = और, सव्वेसिं = सब, पढमं = पहला, होई = है।



अर्थ सौजन्य : श्रीमती पुष्पाबेन गुलाबचन्द शाह, मम्बई

अर्थ - यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों को नष्ट करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है। इसलिये हर शुभ कार्य करने के पहले यह मंत्र जरूर बोलना चाहिए।

इस मंत्र में 5 पद, 35 अक्षर, 58 मात्राऐं होती हैं।

इस मंत्र को पंचपरमेष्ठीमंत्र, अनादिमूलमंत्र, अनादिनिधनमंत्र, महामंत्र, अपराजितमंत्र, नमस्कारमंत्र, मूलमंत्र, मंत्रराज आदि नामों से जाना जाता है।

इस मंत्र की रचना किसी ने नहीं की। यह तो अनादि काल से प्रवर्तमान अनादि निधन मंत्र है। इस मंत्र को ईसा की पहली शताब्दी में सर्वप्रथम आचार्य पुष्पदंत महाराज ने षट्खण्डागम ग्रन्थ के मंगलाचरण के रूप में प्राकृत भाषा में लिपिबद्ध किया था।

## शिक्षा

संसार में जितने भी मंत्रों का प्रचलन है उनमें यह णमोकार महामंत्र सबसे महान् है। इसके प्रतिदिन 108 बार मन लगाकर जाप करने से सभी रोग, संकट, आपत्तियाँ, दुःख आदि दूर हो जाते हैं। समस्त सुखों की प्राप्ति होती है और अंत में मोक्ष प्राप्त होता है। अतः प्रतिदिन इस मंत्र को 108 बार अवश्य जपना चाहिए।

दुःखे सुखे भयस्थाने, पथि दुर्गे रणेऽपि वा।
श्री पंचगुरु मंत्रस्य, पाठः कार्यः पदे-पदे॥

अर्थात्- दुःख में, सुख में, डर के स्थान में, मार्ग में, भयानक स्थान में, युद्ध के मैदान में, कदम-कदम पर णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिये।

## पाठ-2

# चत्तारिदण्डक

| | |
|---|---|
| चत्तारि मंगलं | चार मंगल हैं। |
| अरिहंता मंगलं | अरिहंत मंगल हैं। |
| सिद्धा मंगलं | सिद्ध मंगल हैं। |
| साहू मंगलं | साधु मंगल हैं। |
| केवलि पण्णत्तो-धम्मो मंगलं। | केवली भगवान् द्वारा कहा गया धर्म मंगल है। |
| चत्तारि लोगुत्तमा | लोक में चार उत्तम हैं। |
| अरिहंता लोगुत्तमा | अरिहंत उत्तम हैं। |
| सिद्धा लोगुत्तमा | सिद्ध उत्तम हैं। |
| साहू लोगुत्तमा | साधु उत्तम हैं। |
| केवलि पण्णत्तो-धम्मो लोगुत्तमो। | केवली भगवान् द्वारा कहा गया धर्म लोक में उत्तम है। |
| चत्तारि सरणं पव्वज्जामि | मैं चार की शरण को प्राप्त होता हूँ। |
| अरिहंते सरणं पव्वज्जामि | मैं अरिहंत की शरण को प्राप्त होता हूँ। |
| सिद्धे सरणं पव्वज्जामि | मैं सिद्ध की शरण को प्राप्त होता हूँ। |
| साहू सरणं पव्वज्जामि | मैं साधु की शरण को प्राप्त होता हूँ। |
| केवलि पण्णत्तं धम्मं-सरणं पव्वज्जामि।। | मैं केवली भगवान् द्वारा कहे गये धर्म की शरण को प्राप्त होता हूँ। |

## पाठ-3

# तीर्थंकर

जिनके कल्याणक होते हैं और जो सच्चे धर्म का उपदेश देते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं। कल्याणक पाँच होते हैं। गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, तप कल्याणक, ज्ञान कल्याणक और मोक्ष कल्याणक।

### वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों के नाम व चिह्न

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. ऋषभनाथ | बैल | 2. अजितनाथ | हाथी |
| 3. सम्भवनाथ | घोड़ा | 4. अभिनन्दननाथ | बंदर |
| 5. सुमतिनाथ | चकवा | 6. पद्मप्रभ | श्वेतकमल |
| 7. सुपार्श्वनाथ | स्वस्तिक | 8. चन्द्रप्रभ | चन्द्रमा |
| 9. पुष्पदन्त | मगरमच्छ | 10.शीतलनाथ | कल्पवृक्ष |
| 11. श्रेयांसनाथ | गैंडा | 12.वासुपूज्य | भैंसा |
| 13. विमलनाथ | शूकर | 14.अनन्तनाथ | सेही |
| 15. धर्मनाथ | बज्रदण्ड | 16.शांतिनाथ | हिरण |
| 17. कुन्थुनाथ | बकरा | 18.अरनाथ | मछली |
| 19. मल्लिनाथ | कलश | 20.मुनिसुव्रतनाथ | कछुआ |
| 21. नमिनाथ | लालकमल | 22.नेमिनाथ | शंख |
| 23. पार्श्वनाथ | सर्प | 24. वर्द्धमान | सिंह |

## अनेक नाम वाले तीर्थंकर

तीन तीर्थंकर अनेक नाम वाले हैं। ऋषभदेव को आदिनाथ तथा वृषभनाथ भी कहते हैं। इसी प्रकार पुष्पदन्त का दूसरा नाम सुविधिनाथ तथा वर्द्धमान के महावीर, वीर, अतिवीर और सन्मति नाम भी हैं।

## चिह्न रखने का समय और कारण

जन्म कल्याणक के समय सुमेरु पर्वत पर ले जाकर भगवान् का अभिषेक करते समय दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिह्न सौधर्म इन्द्र को दिखता है उन भगवान् का वही चिह्न इन्द्र निश्चित कर देता है।

यदि चिह्न नहीं रखा जायेगा तो यह मालूम नहीं हो सकेगा कि यह किन तीर्थंकर की मूर्ति है। इस बात को जताने के लिए यह चिह्न रखा जाता है।

## बिना चिह्न की भी मूर्ति ( प्रतिमा ) का नाम

तीर्थंकर के अलावा मुनि अवस्था की मूर्ति, सामान्य केवली की मूर्ति तथा सिद्ध परमेष्ठी की मूर्ति पर चिह्न नहीं होता है।

## तीर्थंकरों के निर्वाण क्षेत्र

24 तीर्थंकरों में से तीर्थंकर ऋषभदेव कैलाश पर्वत से,तीर्थंकर वासुपूज्य चम्पापुरी से, तीर्थंकर नेमिनाथ गिरनार पर्वत से, तीर्थंकर महावीर पावापुरी से और शेष 20 तीर्थंकर श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष पधारे हैं।

पाठ-4

# जीव और अजीव

## जीव का लक्षण भेद और दृष्टान्त

जिसमें जानने ( ज्ञान ) और देखने ( दर्शन ) की शक्ति होती है,जो सुख-दु:ख का अनुभव करता है, उसे जीव कहते हैं। जैसे-मनुष्य, हाथी, घोड़ा,खटमल, लट, वृक्ष आदि।

जीव के दो भेद होते हैं- 1.मुक्त जीव 2. संसारी जीव

## मुक्त जीव का लक्षण

जिनके आठों कर्म नष्ट हो चुके हैं, जो इस संसार के जन्म-मरण के दु:खों से छूट गए हैं, जिनको मोक्ष हो गया है। लौटकर इस संसार में कभी नहीं आयेंगे, उन्हें मुक्त जीव कहते हैं। जैसे-सिद्ध भगवान ।

## संसारी जीव का लक्षण तथा भेद

जो संसार में रहकर जन्म-मरण आदि के दु:खों को सहन करता है, जिसके आठों कर्म होते हैं, उसे संसारी जीव कहते हैं। जैसे-नारकी, देव, मनुष्य, बन्दर, जूँ, बिच्छू, जोंक और वृक्ष आदि।

## मुक्त जीव और संसारी जीव में अन्तर

मुक्त जीव के तो कर्म, जन्म, मरण और दुःख नहीं होते किन्तु संसारी जीव के कर्म, जन्म, मरण और दुःख होते हैं। यही इन दोनों में अन्तर है।

## अजीव का लक्षण और दृष्टान्त

जिसमें जानने और देखने की शक्ति नहीं होती है तथा जो सुख और दुःख का अनुभव नहीं कर सकता, वह अजीव है।

## जीव और अजीव में अन्तर

जीव में जानने और देखने की शक्ति होती है, किन्तु अजीव में जानने तथा देखने की शक्ति नहीं होती, यही जीव और अजीव में अन्तर है।

## शिक्षा

हम संसारी जीव हैं, हमको धर्मपालन करके मुक्त जीव बनने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि जन्म-मरण के दुःख नष्ट हो जायें।

पाठ-5

# इन्द्रियाँ

## इन्द्रिय का लक्षण व भेद

संसारी जीव की पहचान के चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं अथवा संसारी जीव को ज्ञान कराने में शरीर का जो चिह्न सहायक होता है, उस चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं।

स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ होती हैं।

## इन्द्रियों के दूसरे नाम

स्पर्शन का दूसरा नाम त्वचा है, रसना का दूसरा नाम जिह्वा ( जीभ ), घ्राण का दूसरा नाम नासिका ( नाक ) है, चक्षु का दूसरा नाम नेत्र ( आँख ) है और कर्ण का दूसरा नाम श्रोत्र ( कान ) है।

## स्पर्शन इन्द्रिय का लक्षण

जिससे छू जाने ( स्पर्श होने ) पर हल्का, भारी, रूखा, चिकना, कड़ा, नरम, ठंड़ा और गरम जाना जाता है, उसे स्पर्शन इन्द्रिय कहते हैं।

जैसे स्पर्श करने पर रुई-हल्की, लोहा-भारी, बालू-रुखी, घी-चिकना, पत्थर-कडा, रबर-नरम, बर्फ-ठण्डी और आग-गरम मालूम होती है।

## रसना इन्द्रिय का लक्षण

जिससे चखने पर खट्टा,मीठा,कड़वा,कषायला, चरापरा आदि स्वादों को जाना जाता है, उसे रसना इन्द्रिय कहते हैं।

जैसे-चखने पर नींबू खट्टा, गुलाब जामुन मीठा, नीम कड़वी, मिर्च चरपरी, आंवला कषायला मालूम होता है।

## घ्राण इन्द्रिय का लक्षण

जिससे सूंघने पर सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान होता है, उसे घ्राण इन्द्रिय कहते हैं।

जैसे-फूल से सुगन्ध और सड़ी वस्तुओं से दुर्गन्ध आती है।

## चक्षु इन्द्रिय का लक्षण

जिसके द्वारा काला,पीला,नीला,लाल तथा सफेद रंग और इन रंगों के मेल से बने तरह-तरह के रंगों का ज्ञान होता है, उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं।

जैसे-चाँदी सफेद, कोयला-काला, सोना-पीला, मोर पंख-नीला, गेरु-लाल मालूम होती है।

## कर्ण इन्द्रिय का लक्षण

जिसके द्वारा आदमी,जानवर, बाजे आदि की आवाज सुनी जाती है, उसे कर्ण इन्द्रिय कहते हैं।

जैसे-रेडियो, टी.वी., आदमी, जानवर की आवाज सुनना।

पाठ-6

# त्रसजीव

## त्रसजीव का लक्षण एवं दृष्टांत

त्रसजीव-जिनके दो, तीन, चार अथवा पाँच इन्द्रियाँ होती हैं, उन्हें त्रसजीव कहते हैं।

जैसे - लट, चिंवटी, मक्खी, हाथी, घोड़ा, नारकी, देव और मनुष्य आदि।

## दो इन्द्रिय जीव का लक्षण एवं दृष्टांत

जिनके स्पर्शन, रसना ये दो इन्द्रियाँ हैं, वे दो इन्द्रिय जीव हैं। जैसे-लट, केंचुआ, जोंक, सीप, कौड़ी, शंख आदि।

## तीन इन्द्रिय जीव का लक्षण एवं दृष्टांत

जिनके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ होती हैं, उन्हें तीन इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे-चींटी, खटमल, बिच्छू, जूं, घुन, गिजाई आदि।

## चार इन्द्रिय जीव का लक्षण एवं दृष्टांत

जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियाँ होती हैं, उन्हें चार इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे-भौंरा, मच्छर, टिड्डी, मधुमक्खी, मक्खी, बर्र, ततैया आदि।

## पंचेन्द्रिय जीव का लक्षण एवं दृष्टांत

जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ होती हैं, उन्हें पाँच इन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे-मनुष्य, सर्प, हाथी, घोड़ा, तोता आदि।

पाठ-7

# पंचेन्द्रिय जीव

## पंचेन्द्रिय जीव के भेद

सैनी और असैनी ये दो पंचेन्द्रिय जीव के भेद हैं, सैनी को संज्ञी या समनस्क और असैनी को असंज्ञी या अमनस्क भी कहते हैं।

## सैनी जीव का लक्षण और दृष्टान्त

जिसके मन होता है अर्थात् जो शिक्षा और उपदेश ग्रहण कर सकता है, उसे सैनी कहते हैं। जैसे-मनुष्य, सर्प, हाथी, घोड़ा आदि।

## असैनी जीव का लक्षण और दृष्टान्त

जिसके मन नहीं होता है अर्थात् जो शिक्षा और उपदेश ग्रहण नहीं कर सकता है, उसे असैनी कहते हैं। जैसे-जलसर्प, कोई तोता आदि।

एकेन्द्रिय और विकलत्रय जीव नियम से असैनी ही होते हैं। देव, नारकी तथा मनुष्य नियम से सैनी ही होते हैं, किन्तु तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय जीवों में कोई सैनी और कोई असैनी होते हैं।

## सैनी और असैनी में अन्तर

सैनी तो शिक्षा और उपदेश ग्रहण कर सकता है किन्तु असैनी शिक्षा और उपदेश ग्रहण नहीं कर सकता है। यही इन दोनों में अन्तर है।

## तिर्यंच पंचन्द्रिये जीव के भेद

तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव के जलचर जीव, थलचर जीव और नभचर जीव ये तीन भेद हैं।

## जलचर जीव का लक्षण और उदाहरण

जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव जल में ही रहता है, उसे जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे-मगर, मछली, कछुआ, मेंढ़क और जलसर्प आदि।

## थलचर जीव का लक्षण और उदाहरण

जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव पृथ्वी पर चलता फिरता है, उसे थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे- हाथी, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली आदि।

## नभचर जीव का लक्षण और उदाहरण

जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव आकाश में उड़ा करते हैं, उसे नभचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं। जैसे-तोता, कौवा, कबूतर, चिड़िया और चील आदि।

## विकलत्रय जीव का लक्षण और भेद

दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय और चार इन्द्रिय जीवों को विकलत्रय जीव कहते हैं, इसके ये ही तीन भेद हैं।

पाठ-8

# स्थावर ( एकेन्द्रिय ) जीव

जिनके एक ही स्पर्शन इन्द्रिय होती है, उसे स्थावर जीव कहते हैं। जैसे पृथ्वी ( जमीन ) अप् ( पानी ) तेज ( अग्नि ) वायु ( हवा ) और वनस्पति ( वृक्ष, फल, फूल, जड़ ) इत्यादि।

## त्रस और स्थावर में अन्तर

स्थावर के तो एक ही इन्द्रिय होती है, किन्तु त्रस के दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ होती हैं यही त्रस और स्थावर में अन्तर है।

## स्थावर जीव के भेद

पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पाँच स्थावर एकेन्द्रिय जीव के भेद हैं।

## पृथ्वीकायिक जीव का लक्षण व उदाहरण

पृथ्वी ही जिस जीव का शरीर होता है, उसे पृथ्वीकायिक जीव कहते हैं।

जैसे-मिट्टी, पाषाण, अभ्रक, सोना, पन्ना आदि खान से निकलने वाली वस्तुओं में पाये जाने वाले जीव।

## जलकायिक जीव का लक्षण व उदाहरण

जल ही जिस जीव का शरीर होता है, उसे जलकायिक जीव

कहते हैं।

जैसे-बर्फ, ओला, पानी आदि में पाये जाने वाले जीव।

## अग्निकायिक जीव का लक्षण व उदाहरण

अग्नि ही जिस जीव का शरीर होता है, उसे अग्निकायिक जीव कहते हैं।

जैसे-दीपक की लौ, अग्नि, बिजली आदि में पाये जाने वाले जीव।

## वायुकायिक जीव का लक्षण व उदाहरण

वायु ( हवा ) ही जिस जीव का शरीर होता है, उसे वायुकायिक जीव कहते हैं।

जैसे-हवा, आंधी आदि में पाये जाने वाले जीव।

## वनस्पतिकायिक जीव का लक्षण व उदाहरण

वनस्पति ही जिस जीव का शरीर होता है, उसे वनस्पति कायिक जीव कहते हैं।

जैसे-वृक्ष, लता, फल, फूल आदि में पाये जाने वाले जीव।

## छह काय के जीवों के नाम व भेद

पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक ये छह षट्काय के जीव हैं।

## पाठ-9

# कषाय

### कषाय का लक्षण व भेद

जो आत्मा को कषता, दुःख देता या पराधीन करता है, उसे कषाय कहते हैं अथवा जो सम्यक्त्व और चारित्र गुण को नहीं होने देता, उसे कषाय कहते हैं।

### क्रोध कषाय का लक्षण और उदाहरण

गुस्सा करने को क्रोध कहते हैं। जैसे-एक कमजोर विद्यार्थी ने एक होशियार विद्यार्थी से कोई पाठ पूछा, इतने में ही वह गुस्से में आ गया, तो उसके क्रोध कषाय हुई।

### मान कषाय का लक्षण और उदाहरण

अहंकार, घमण्ड ( अभिमान ) को मान कहते हैं। जैसे-एक विद्यार्थी अपने धन, ज्ञान और रूप आदि का घमण्ड करता है तो उसके मान कषाय हुई।

### माया कषाय का लक्षण और उदाहरण

छल-कपट करने को माया कहते हैं। जैसे-कोई विद्यार्थी सदा खेलता रहता है किन्तु गुरु के आने पर उन्हें धोखा देने को पुस्तक पढ़ने लगता है तो उसके माया कषाय हुई।

### लोभ कषाय का लक्षण और उदाहरण

लालच या तृष्णा को लोभ कषाय कहते हैं। जैसे-एक छात्र बिना मतलब बहुत सी वस्तुएँ इकट्ठी करता है तो उसके लोभ कषाय हुई।

### कषाय से हानि

कषाय से आत्मा का पतन, कर्म का बन्ध, पापों में प्रवृत्ति, अपयश और दुःख होता है।

## पाठ-10

# पाप

खराब कामों का करना पाप कहलाता है। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह, ये पाँच पाप हैं।

## हिंसा पाप का लक्षण और उदाहरण

प्रमादवश किसी जीव को मारना, सताना, उसका दिल दुःखाना आदि को हिंसा कहते हैं। जैसे-अपना घात कर लेना, किसी जीव को मार डालना या किसी को सताना या दुःख देना।

## झूठ पाप का लक्षण और उदाहरण

प्रमादवश जिस बात या जिस चीज को जैसा देखा या सुना हो वैसा न कहना झूठ है। जैसे-किसी ने अपने सामने चोरी की तो भी पूछने पर कहना कि इसने चोरी नहीं की।

## चोरी पाप का लक्षण और उदाहरण

प्रमादवश बिना दिये किसी की गिरी, पड़ी, रखी या भूली हुई वस्तु को ग्रहण करना अथवा उठाकर किसी को दे देना, चोरी है। जैसे- रास्ते में पड़ा हुआ रुपया उठा लेना या उठाकर दूसरे को दे देना।

## कुशील पाप का लक्षण और उदाहरण

परायी स्त्री या पर पुरुष के साथ रमण करने को कुशील कहते हैं। जैसे-पराई स्त्री या पर पुरुष से अनुचित कार्य करना आदि।

## परिग्रह पाप का लक्षण और उदाहरण

जमीन, मकान, धन, धान्य, गाय, बैल आदि से मोह रखना। इन संसारी चीजों को इकट्ठा करने में लालसा रखना परिग्रह है। जैसे-अनावश्यक बहुत कपड़े और जेवरों का इकट्ठा करना।

पाप को सेवन करने वाला पापी कहलाता है। लोक व समाज में बुरी दृष्टि से देखा जाता है। कल्याण के मूल कारण अणुव्रत उसके नहीं हो पाते हैं।

## पाठ-11

# गति

## गति का लक्षण व भेद

गति नामकर्म के उदय से प्राप्त होने वाली पर्याय को गति कहते हैं। नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति ये चार गतियाँ हैं।

## नरकगति का लक्षण

नरकगति नामकर्म के उदय से नरक में जन्म होना, नरकगति कहलाती है। इससे प्राणी को नारकी का शरीर धारण करना पड़ता है। जब मनुष्य या पशु मरकर नरक में जन्म लेता है, तब उसे नरकगति का होना कहते हैं। इन नरकों में जीव को दिन-रात असह्य दु:ख भोगना पड़ता है।

बहुत आरम्भ करने और बहुत परिग्रह रखने से नरकों में जन्म होता है। नीचे पाताल लोक में सात नरक हैं। घम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवा और माघवी।

## तिर्यंचगति का लक्षण

तिर्यंचगति नामकर्म के उदय से तिर्यंचों में जन्म होना, तिर्यंचगति कहलाती है। इससे प्राणी को घोड़ा, गाय, हाथी, विकलत्रय और स्थावर की पर्यायें प्राप्त होती हैं। जब कोई जीव मरकर इन तिर्यंचों में जन्म लेता है, तब उसे तिर्यंचगति का होना कहते हैं। मायाचारी आदि करने से तिर्यंचों में जन्म होता है।

## मनुष्यगति का लक्षण

मनुष्यगति नामकर्म के उदय से मनुष्यों में जन्म होना मनुष्यगति कहलाती है। इससे प्राणी को मनुष्य का शरीर धारण करना पड़ता

है। जब कोई प्राणी मरकर मनुष्यों में जन्म लेता है, तब उसे मनुष्यगति का होना कहते हैं। थोड़ा आरम्भ और थोड़ा परिग्रह रखने से मनुष्यगति प्राप्त होती है।

## देवगति का लक्षण

देवगति नामकर्म के उदय से देवों में जन्म होना देवगति कहलाती है। इससे प्राणी को देव का शरीर धारण करना पड़ता है। इनका वैक्रियिक शरीर होता है। जब मनुष्य या पशु मरकर देवों में जन्म लेता है, तब उसे देवगति का होना कहते हैं।

स्वभाव की कोमलता, बालतप और धर्म सेवन आदि से देव गति प्राप्त होती है। इससे जीव को देव की पर्याय प्राप्त होती है।

## बिना गति का जीव

सिद्ध या मुक्त जीव किसी भी गति के जीव नहीं हैं, क्योंकि गति की प्राप्ति कर्म के ही निमित्त से होती है और मुक्त जीव के कर्म नहीं होते हैं।

## गति की अपेक्षा इन्द्रियाँ

नारकी, देव और मनुष्य पंचेन्द्रिय ही होते हैं। तिर्यंचों के यथायोग्य 1,2,3,4 और 5 इन्द्रियाँ होती हैं।

## गतियों में आवागमन

नरक गति से मरकर देवगति में नहीं जाते। देव गति से मरकर नरकगति में नहीं जाते। नरक से मरकर नरक में और देव से मरकर देव में भी उत्पन्न नहीं होते। तिर्यंच व मनुष्य मरकर चारों गति में जा सकते हैं।

## सबसे अच्छी गति

सबसे अच्छी गति 'मनुष्यगति' है क्योंकि ध्यान, महाव्रत पालन और मोक्ष मनुष्यगति से ही हो सकता है।

पाठ-12

# जैन कुलाचार

हमको बड़े भाग्य से उच्चकुल एवं जैनधर्म की प्राप्ति हुई है। अतः हमको अपना आचरण, खानपान आदि भी धर्म के अनुसार उचित बनाना चाहिए। जिसके लिए निम्न बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है-

## 1. देवदर्शन

हमको प्रतिदिन प्रातःकाल श्री जिनेन्द्र भगवान् के दर्शन अवश्य करने चाहिए। जिसकी विधि इस प्रकार है- प्रातः उठते ही णमोकार मंत्र का स्मरण करना चाहिए। उसके बाद मंजन, स्नान आदि क्रियाकर शुद्ध वस्त्र पहनकर हाथ में सामग्री लेकर,जीव जन्तुओं की रक्षा करते हुए जिनमंदिर जाना चाहिए। मन्दिर के बाहर जूते, चप्पल उतार कर पानी से हाथ पैर धोकर, भगवान् की जय-जयकार करते हुए तीन बार निःसहि, निःसहि, निःसहि बोलना चाहिये। इसके बाद ओम् जय, जय, जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु बोलकर णमोकार मंत्र बोलना चाहिए, इसके बाद ढोक देनी चाहिए। इसके उपरांत णमोकार मंत्र का माहात्म्य ( एसो पंच णमोयारो..... ) तथा 24 तीर्थंकरों के नाम बोलने चाहिए। यदि अर्घ याद हों तो अर्घ बोलकर सामग्री चढ़ाना श्रेष्ठ है। इसके बाद प्रभुपतित पावन, दर्शनं देव देवस्य, अहो जगत गुरुदेव, सकल ज्ञेयज्ञायक आदि स्तुति बोलते हुए भगवान् की तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए। प्रदक्षिणा देते समय सभी दिशाओं में भगवान् की तरफ देखते हुए नमस्कार करना चाहिए। इसके बाद पुनः ढोक देकर गंधोदक लगाते समय यह मंत्र बोलना चाहिए।

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वंदे, अष्टकर्म विनाशनम्॥

इसके उपरांत नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ने के बाद मंदिर जी रखे हुए शास्त्र अवश्य पढ़ना चाहिए। यदि समय हो तो णमोकार मंत्र की एक माला

जपनी चाहिए एवं भगवान् की तरफ पीठ न करते हुए मंदिर जी से बाहर आना चाहिए।

नोट :- 1. मंदिर जी में प्रवेश करते समय चमड़े आदि की अशुद्ध वस्तुएँ नहीं पहननी चाहिए। 2. झूठे मुंह मंदिर जी में प्रवेश नहीं करना चाहिए। 3. हाथ-पैर धोकर ही मंदिर जी में प्रवेश करना चाहिए। 4. मंदिर जी में जब तक दर्शन करें तब तक भगवान् की मूर्ति की ओर देखना चाहिए। अन्य ओर नजर नहीं करना चाहिए तथा किसी अन्य से कोई बात भी नहीं करनी चाहिए।

## 2. रात्रिभोजन त्याग

जीवों की रक्षा करना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। दिन में सूर्य की किरणें जीवों को उत्पन्न नहीं होने देतीं। जैसे हम देखते हैं कि बारिश के दिनों में सूर्य अस्त होते ही बिजली के बल्ब पर कीड़े आने लगते हैं जबकि वे दिन में नहीं आते। इससे सिद्ध है कि दिन में जीवों की उत्पत्ति बहुत कम या नहीं होती। इसलिये हमको दिन में ही भोजन बनाना एवं करना चाहिए। रात्रि में भोजन करने से मांसभक्षण हो जाने का दोष लगता है। रात्रि में भोजन करके सो जाने पर पाचन क्रिया खराब हो जाती है, जिससे कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। रात्रि में भोजन करते समय सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों का अभाव रहता है और हमें पूर्ण रूप से विटामिन डी नहीं मिल पाता है। अतः भोजन दिन में ही करना चाहिये।

## 3. पानी छानकर पीना

पानी की एक बूँद में असंख्यात जीव होते हैं, ऐसा जैनाचार्यों ने बताया है। बिना छने पानी पीने से उन जीवों का घात होता है और स्वास्थ्य भी बिगड़ता है। वैज्ञानिकों ने भी बिना छने पानी की एक बूंद में 36450 जीव बताये हैं। इसलिए सदा ही पानी छानकर पीना चाहिये।

मोटे कपड़े का दोहरा छन्ना होना चाहिए ( जिससे सूर्य की रोशनी न दिखे )। छना हुआ पानी 48 मिनिट तक त्रस जीव रहित रहता है तदुपरांत उसमें त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं अतः उसे फिर से छानना चाहिये।

पाठ-13

# जीव दया पालने का उपदेश

सबसे बड़ा धर्म अहिंसा या जीवों पर दया पालन करना है। अत: हमें निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिए-

1. किसी मच्छर-मक्खी, चींटी आदि को नहीं मारना चाहिए। जमीन पर नीचे देखकर चलना चाहिए, घास पर नहीं चलना चाहिए। बिना मतलब फूल-पत्ती तोड़ना, पानी फैलाना, बिजली जलती हुई छोड़ देना, पंखा चलता छोड़ देना आदि कार्यों में जीव हिंसा होती है। अत: ये कार्य नहीं करना चाहिए।

2. डबलरोटी ( ब्रेड ), विदेशी चॉकलेट, बिस्कुट, बर्थ डे केक,जलेबी, प्याज, लहसुन, गोभी, बैंगन तथा जमीन के अंदर पैदा होने वाली आलू, मूली, गाजर आदि सब्जियाँ नहीं खानी चाहिए। बेसन या दाल से बने हुए पदार्थों को दही के साथ मिलाकर ( द्विदल ) नहीं खाना चाहिए।

3. जिन साबुन, टूथपेस्ट, शेविंगक्रीम, शैम्पू, क्रीम, लिपिस्टक आदि वस्तुओं में चर्बी, खून आदि अशुद्ध पदार्थ मिलाये जाते हैं, उनको इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

4. रेशम के बनाने में जीव हिंसा बहुत होती है, अत: रेशमी वस्त्र, कमीज, कुर्ता, साड़ी आदि नहीं पहनना चाहिए।

5. चमड़े के जूते, चप्पल, पर्स, बैल्ट, बैग आदि इस्तेमाल नहीं करने चाहिए।

पाठ-14

# सप्त व्यसन एवं अष्ट मूलगुण

बुरी आदतों को व्यसन कहते हैं।

व्यसन सात हैं-1. जुआ खेलना, 2. मांस खाना, 3. मद्यपान करना, 4.वेश्यागमन, 5.शिकार, 6.चोरी करना और 7. परस्त्री सेवन करना।

## 1.जुआ खेलना

रुपये की हार-जीत बदकर ताश खेलना, सट्टा खेलना, शेयर का सट्टा करना, मैच या चुनाव का सट्टा करना जुआ कहलाता है।

## 2. मांस खाना

जीवों को मारकर अथवा मरे हुए जीवों का कलेवर खाना, मांस खाना कहलाता है। जैसे- नॉनवेज खाना, अंडा खाना, पेस्ट्री खाना आदि। मांस खाने वाले हिंसक और निर्दयी कहलाते हैं।

## 3. मद्यपान

जिन वस्तुओं के पीने या खाने से नशा आता हो, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती हो, कैंसर आदि भयानक रोग हो जाते हों, उसे मद्यपान कहते हैं। जैसे-शराब, वाइन, विस्की आदि पीना।

## 4. वेश्यागमन

वेश्या के पास आना-जाना और उससे अनुचित सम्बन्ध रखना।

## 5. शिकार

जंगल के रीछ, बाघ, सूअर, हिरण वगैरह जानवरों को तथा उड़ते हुए छोटे-छोटे पक्षियों को शौक के लिये या खाने के लिये मारना शिकार कहलाता है।

## 6.चोरी करना

आदतन किसी की अच्छी लगने वाली वस्तु को देखकर नियत खराब करते हुये बिना बताये उठाकर ले आना चोरी है।

## 7. परस्त्री सेवन करना

अपनी स्त्री अर्थात् जिसके साथ धर्मानुकूल विवाह किया है, उसको छोड़कर, अन्य स्त्री के साथ विषय सेवन करना परस्त्री सेवन है।

# अष्ट मूलगुण

1. मद्य त्याग-शराब, तम्बाकू, गुटखा आदि मादक वस्तुओं के सेवन करने का त्याग करना मद्य त्याग है।

2. मांस त्याग-नॉनवेज, अंडा, केक, विदेशी-टाफियां, चीज, बाजार की आइसक्रीम, भूरे निशान वाली खाद्य वस्तुओं को नहीं खाना, मांस त्याग है।

3. मधु ( शहद ) त्याग-मधु अनंत जीवों के घात से उत्पन्न होता है। यह मधु-मक्खियों का उगाल है। इस उगाल को शहद कहा जाता है। यह अपवित्र पदार्थ है, इसका त्याग करना चाहिए।

4. पंच उदुम्बर फलों का त्याग-बड़, पीपल, ऊमर ,कठूमर, पाकर, इन पाँच फलों को उदुम्बर फल कहते हैं। इनके मध्य में अनेक सूक्ष्म-स्थूल त्रस जीव पाये जाते हैं, जिनके खाने से अगणित त्रस जीवों का घात होता है। अतः इन सबका त्याग आवश्यक है।

## शिक्षा

ऊपर लिखे सप्तव्यसनों के सेवन की आदत लग जाने पर बहुत मुश्किल से छूटती है। बहुत पाप का बंध होता है। इस लोक एवं परलोक में बदनामी एवं दुःख उठाने पड़ते हैं। नरक एवं तिर्यंचगति में जन्म मिलता है। सभी लोग निन्दा करते हैं। अतः इन सप्त व्यसनों का जीवन भर के लिए त्याग करना चाहिए और अष्टमूलगुण धारण करना चाहिए।

## पाठ-15

# चतुर्विध संघ

1. मुनि -जो समस्त परिग्रहों से रहित होते हैं,नग्न दिगम्बर होते हैं,दिन में एक बार खड़े होकर अपने हाथों में शुद्ध आहार लेते हैं, 28 मूलगुणों का पालन करते हैं,पीछी कमण्डलु रखते हैं तथा केशलोंच करते हैं, उन्हें मुनि कहते हैं। इनको नमोस्तु कहकर ढोक देनी चाहिये।

2. आर्यिका-जो पीछी कमण्डलु रखती हैं, सिर्फ एक साड़ी पहनती हैं,मुनियों की तरह महाव्रतों का पालन एवं केशलोंच करती हैं,दिन में एक बार बैठकर हाथ में आहार लेती हैं, उन्हें आर्यिका कहते हैं। इनको वंदामि कहकर नमस्कार करना चाहिए।

3. ( अ ) ऐलक-जो केवल एक लंगोट मात्र पहनते हैं,पीछी कमण्डलु रखते हैं,केशलोंच करते हैं तथा बैठकर हाथ में आहार ग्रहण करते हैं,ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करते हैं। इनको नमस्कार करते समय इच्छामि बोलना चाहिए।

3. ( ब ) क्षुल्लक- जो पीछी कमण्डलु रखते हैं, केवल एक लंगोट तथा छोटा दुपट्टा रखते हैं,बैठकर कटोरे में या हाथ में आहार करते हैं, केशलोंच करते हैं या कैंची से भी बाल बना सकते हैं,श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करते हैं। इनको नमस्कार करते समय इच्छामि कहना चाहिए।

4. क्षुल्लिका-जो क्षुल्लक की तरह सभी क्रियायें करती हैं,एक साड़ी और एक चद्दर रखती हैं, इनको नमस्कार करते समय इच्छामि कहना चाहिए।

विशेष:-अन्य प्रतिमाधारी श्रावक व श्राविका को वंदना एवं साधर्मी भाई-बहिनों से जयजिनेन्द्र कहना चाहिए।



मूल्य : 3/- रुपये

# हमारे दैनिक कर्तव्य

1. सूर्य उदय से पहले उठना चाहिये।
2. सुबह उठते ही णमोकार मंत्र बोलना चाहिए।
3. सुबह माता-पिता एवं बड़ों के चरणस्पर्श एवं सभी से जयजिनेन्द्र बोलना चाहिए।
4. प्रतिदिन मंदिर जी में भगवान के दर्शन एवं स्वाध्याय करना चाहिए।
5. प्रतिदिन मंदिर जी की गोलक में कुछ पैसे अवश्य डालने चाहिए।
6. भोजन करने से पहले णमोकार मत्र बोलना चाहिए।
7. भोजन करने के बाद 9 बार णमोकार मंत्र बोलना चाहिए।
8. टी.वी. नहीं देखना चाहिए यदि देखें तो एक घंटे से ज्यादा नहीं।
9. किसी को अपशब्द नहीं बोलना चाहिए।
10. बड़ों से जी लगाकर के ही बोलना चाहिए।
11. सबसे प्रसन्न मुद्रा में शिष्टाचारपूर्वक बोलना चाहिए।
12. भाई-बहिनों से या अन्य किसी से झगड़ना नहीं चाहिए।
13. सायं/अंधेरा होने से पहले भोजन कर लेना चाहिए। उसके बाद अन्न की वस्तु नहीं खाना चाहिए।
14. रात्रि में सोने से पहले दादा-दादी एवं माता-पिता की सेवा करके, आर्शीवाद प्राप्त करके सोना चाहिए।
15. सोने से पहले 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिए।
16. घर में आये मेहमानों के चरण-स्पर्श करके जयजिनेन्द्र बोलना चाहिए एवं उनसे मीठी-मीठी बातें करना चाहिए।
17. माता-पिता की आज्ञा मानना चाहिए।